ग्रामीण परिवारवाद (Rural Familism) की अवधारणा -

सोरोकिन व जिमरमैन का मत है कि सभी कृषि प्रधान समाजों के सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक संगठनों पर ग्रामीण परिवार की छाप अंकित रही है। इन्हीं विशेषताओं को वे परिवारवाद कहते हैं। साधारणत: परिवारवाद का अर्थ है समाज में व्यक्ति के स्थान पर परिवार को अधिक महत्त्व प्रदान करना। बर्गेस एवं लॉक इसकी परिभाषा करते हुए लिखते हैं "सामान्य रूप में परिवारवाद या पारिवारिकता का अर्थ है व्यक्तिगत सदस्यों के हित को अधीनस्थ मान कर परिवार समूह के कल्याण को केन्द्रीय रूप में स्वीकार करना। सोरोकिन, जिमरमैन और अन्य विद्वानों ने ग्रामीण समुदाय और सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों पर पारिवारिकता की छाप का उल्लेख किया है। विभिन्न ग्रामीण सामाजिक अंगों का उल्लेख करेंगें जिनपर

परिवारवाद का प्रभाव अंकित है -

(1) ग्रामीण समाज में बाल विवाह पाए जाते हैं और उनकी संख्या भी अधिक होती है।

(2) परिवार ही सामाजिक उत्तरदायित्व की इकाई है, क्योंकि वह ~~समाज~~ समाज की भी इकाई है। कर की अदायगी व सामाजिक दायित्वों का निर्वाह परिवार द्वारा ही सामूहिक रूप से किया जाता है। परिवार ही व्यक्ति को सामाजिक प्रस्थिति प्रदान करता है।

(3) परिवार ही सामाजिक मानदण्डों का आधार है। माता-पिता के प्रति संतानों एवं पति के प्रति पत्नी के कर्तव्यों का निर्धारण नैतिक संहिता, धार्मिक सिद्धांतों और सामाजिक व कानूनी प्रतिमान द्वारा किया जाता है।

4) परिवार की छाप ग्रामीण स्वरूप पर भी पाई जाती है। शासक व शासित के बीच संबंध पिता पुत्र की ही भांति होते हैं। परिवार के मुखिया के भांति ही राजनैतिक मुखिया होता है।

(5) ग्रामीण समाज में समझौता संबंधों (Contractual Relations) के स्थान पर सहयोगी संबंध पाए जाते हैं।

(6) ग्रामीण आर्थिक संस्था में परिवार उत्पादन, उपभोग व विनिमय की इकाई है। ग्रामीण समाज में मुद्रा के स्थान पर वस्तु विनिमय का अधिक प्रचलन रहा है। आर्थिक संबंधों में परिवारवाद की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है

(7) ग्रामीण धर्म एवं संस्कारों का उद्देश्य परिवार की समृद्धि व सुरक्षा है। पूर्वज और देवी-देवता की पूजा का स्वरूप भी पारिवारिक है

—x—